MODEL PAPER – 2

समय : 3 घंटा 15 मिनट] **[पूर्णांक : 100**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर-पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
4. इस प्रश्न पत्र को धयानपूर्वक पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है, खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. **खण्ड-अ** में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जायगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर-पत्रक में दिये गये सही विकल्प को नीले/काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के ह्वाइटनर/तरल पदार्थ/ब्लेड/नाखून आदि का OMR उत्तर-पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
7. **खण्ड-ब** में कुल 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड-अ : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

❑ प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गये सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। **50 × 1 = 50**

1. हिन्दी में ऊष्म व्यंजनों की संख्या कितनी है ?
(A) दो (B) तीन (C) चार (D) पाँच

2. फ्रैंक्वा का आया कौन थी ?
(A) कारमेन (B) फर्डिनांड (C) ऐमिली (D) बनाशो

3. निम्नलिखित में कौन कवि छायावादी है ?
(A) भूषण (B) जयशंकर
(C) विनोद कुमार शुक्ल (D) नाभादास

4. 'जलज' शब्द किस शब्द का उदाहरण है ?
(A) रूढ़ (B) देशज
(C) योगरूढ़ (D) विदेशी

5. 'प्रथम' शब्द का विशेषण क्या है ?
(A) प्राथमिक (B) प्रयास
(C) प्रार्थना (D) पृथक

6. 'हिन्दी के एडीसन' निम्नलिखित में से कौन कहे जाते हैं ?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(C) जयप्रकाश नारायण (D) दिनकर

7. 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता कैसी रचना है ?
(A) शोक गीत (B) लोक गीत
(C) स्तुति गीत (D) राष्ट्रीय गीत

8. 'जानवर और जानवर' शीर्षक रचना किसकी है ?
(A) उदय प्रकाश (B) मोहन राकेश
(C) अज्ञेय (D) बालकृष्ण भट्ट

9. बालकृष्ण भट्ट का जन्म हुआ था—
(A) 23 जून, 1884 ई॰ को (B) 3 जून, 1844 ई॰ को
(C) 20 जुलाई, 1902 ई॰ को (D) 18 सितम्बर, 1834 ई॰ को

10. पलटन का विदूषक कौन था?
(A) हजारा सिंह (B) मुख्तार सिंह
(C) वजीरा सिंह (D) कुलदीप सिंह

11. 'माटी के मूरते' रचना किसकी है?
(A) रामधारी सिंह 'दिनकर' (B) रामवृक्ष बेनीपुरी
(C) गजानन माधव मुक्तिबोध (D) आरसी प्रसाद सिंह

12. कौन-सी कृति रामधारी सिंह 'दिनकर' की लिखी हुई है?
(A) शुद्ध कविता की खोज (B) पुनर्नवा
(C) स्मृति की रेखाएँ (D) कविता के नए प्रतिमान

13. अज्ञेय के पिता का नाम था—
(A) दयानंद शास्त्री (B) डॉ॰ हीरानंद शास्त्री
(C) डॉ॰ अभयानंद शास्त्री (D) डॉ॰ अच्युतानन्द शास्त्री

14. प्रथम विश्वयुद्ध में इंगलैंड किसके विरुद्ध लड़ा था?
(A) भारत (B) आस्ट्रेलिया
(C) अमेरिका (D) जर्मनी

15. चंपारन में धाँगड़ कहाँ से आए?
(A) राँची (B) जमशेदपुर
(C) छोटानागपुर (D) आंध्र प्रदेश

16. 'सिपाही की माँ' किस एकांकी संग्रह से लिया गया है?
(A) ऊसर (B) भोर का तारा
(C) रेशमी टाई
(D) अंडे के छिलके तथा अन्य एकांकी

17. निम्नलिखित में कौन 'प्रलय की छाया' के कवि है?
(A) निराला (B) पंत
(C) जयशंकर प्रसाद (D) रामकुमार वर्मा

18. 'सलाम' कहानी-संग्रह के कहानीकार है—
(A) जयशंकर प्रसाद (B) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(C) कृष्णा सोबती (D) कमलेश्वर

19. कौन-सी रचना मलयज की नहीं है?
(A) जख्म पर धूल (B) संवाद और एकालाप
(C) 'रामचन्द्र शुक्ल' (D) सुनो राधिके

20. पंडित राम औतार क्या थे?
(A) ज्योतिषी (B) वैद्य
(C) राजनेता (D) ज्योतिषी और वैद्य

21. जे॰ कृष्णमूर्ति क जन्म कब हुआ था?
(A) 12 मई, 1895 ई॰ को (B) 18 जून, 1892 ई॰ को
(C) 23 मई, 1898 ई॰ को (D) 15 अगस्त, 1902 ई॰ को

22. पद्मावत के रचनाकार है—
(A) जायसी (B) सूरदास
(C) कालिदास (D) दिनकर

23. सूरदास के गुरु का क्या नाम था?
(A) नरहरिदास (B) विट्ठलनाथ
(C) वल्लभाचार्य (D) आनंददास

24. तुलसीदास का मूल नाम क्या था?
(A) बमभोला (B) रामबोला
(C) हरिबोला (D) इनमें कोई नहीं

25. 'भक्तमाल' के रचयिता कौन है?
(A) कबीरदास (B) गुरु नानक
(C) रैदास (D) नाभादास

26. भूषण के पिता का नाम था—
(A) रत्नाकार त्रिपाठी (B) नंदन त्रिपाठी
(C) भृगुनंदन त्रिपाठी (D) शत्रुघ्न त्रिपाठी

27. जयशंकर प्रसाद किस वाद के कवि थे?
(A) छायावाद (B) प्रगतिवाद
(C) प्रयोगवाद (D) अतियथार्थवाद

28. 'बिखरे मोती' क्या है?
(A) उपन्यास (B) काव्य संकलन
(C) निबंध संकलन (D) कहानी संग्रह

29. शमशेर बहादुर सिंह की पत्नी का नाम क्या है?
(A) कर्म देवी (B) धर्म देवी
(C) रीता देवी (D) इनमें से कोई नहीं

30. मुक्तिबोध की माँ का नाम क्या था?
(A) पुतली बाई (B) पार्वती बाई
(C) अम्बिका बाई (D) राधा बाई

31. आशीर्वाद का संधि-विच्छेद करें?
(A) आशीर + वाद (B) आशी: + वाद
(C) आर्शी + वाद (D) इनमें से कोई नहीं

32. नायक किस संधि का उदाहरण है?
(A) दीर्घ संधि (B) गुण संधि
(C) वृद्धि संधि (D) अयादि संधि

33. सदैव किस संधि का उदाहरण है?
(A) वृद्धि संधि (B) यण संधि
(C) अयादि संधि (D) गुण संधि

34. सम्मति का संधि-विच्छेद क्या होगा?
(A) सम् + मति (B) सन् + मति
(C) सद् + मति (D) सत् + मति

35. दश हैं आनन जिसके अर्थात् दशानन (रावण) में कौन-सा समास है?
(A) बहुब्रीहि (B) अव्ययी भाव
(C) द्विगु (D) तत्पुरुष

36. 'गजानन' शब्द किस समास का उदाहरण है?
(A) बहुव्रीहि (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

37. चरणकमल में प्रयुक्त समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) कर्मधारय
(C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

38. आकर्षण का विलोम है?
(A) आकृष्ट (B) विकर्षण
(C) अनाकर्षण (D) पराकर्षण

39. अनाथ का विलोम है?
(A) धनी (B) सनाथ
(C) निर्धन (D) बेकार

40. धुंधला में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) ला (B) धुंध
(C) धुं (D) धला

41. निम्नलिखित पद 'इक' प्रत्यय लगने से बने हैं। इनमें से कौन-सा पद गलत है?
(A) दैविक (B) सामाजिक
(C) भौमिक (D) पक्षिक

42. विज्ञान में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) अन (B) विज्ञ
(C) आन (D) वि

43. अमृत का पर्यायवाची नहीं है?
(A) अमिय (B) सुधा
(C) पीयूष (D) रसाल

44. 'काठ का उल्लू' मुहावरा का क्या अर्थ है?
(A) निर्जीव (B) गुणवान
(C) मूर्ख (D) अत्यधिक सरल

45. 'कच्चे घड़े पानी भरना' मुहावरा का क्या अर्थ होगा?
(A) कमजोर से मदद की अपेक्षा रखना
(B) ठीक ढंग से काम न करना
(C) कठिन काम करना (D) मूर्खतापूर्ण कार्य करना

46. 'चूड़िया पहनना' मुहावरा का क्या अर्थ होगा?
(A) वीरता दिखाना (B) पौरूप प्रदर्शन
(C) कायरता दिखाना (D) शक्तिशाली होना

47. इन्द्र का पर्यायवाची है?
(A) वाजीगर (B) राजराज
(C) मघवा (D) विनायक

48. किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?
(A) उपकार (B) लाभदायक
(C) पढ़ाई (D) अपनापन

49. विज्ञान में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) अन (B) ज्ञान (C) वि (D) विज्ञ

50. 'प्रतिकूल' शब्द में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है?
(A) प्र (B) परा (C) परि (D) प्रति

51. 'प्रगीत और समाज' निबंध किस निबंध-संग्रह से लिया गया है?
(A) दूसरी परंपरा की खोज से (B) आलोचक के मुख से
(C) कहना न होगा से (D) वाद-विवाद संवाद से

52. 'आदमी' शब्द है—
(A) अंग्रेजी (B) फारसी
(C) अरबी (D) तुर्की

53. स्वरूप या रचना के अनुसार वाक्य के भेद है—
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

54. 'मैं देखता हूँ' वाक्य है—
(A) सरल वाक्य (B) मिश्र वाक्य
(C) संयुक्त वाक्य (D) इनमें से कोई नहीं

55. 'तिरिछ' किस प्रकार की रचना है?
(A) आधुनिक त्रासदी (B) सुखान्त की
(C) हँसी लाने वाली (D) आधुनिक कामेडी

56. 'कहीं नहीं वहीं' कविता संग्रह किसके द्वारा रचित है?
(A) भूषण (B) अशोक वाजपेयी
(C) जयशंकर प्रसाद (D) रघुवीर सहाय

57. ज्ञानेन्द्रपति किस प्रशासनिक पद पर थे?
(A) जिलाधिकारी (B) पुलिस अधिकारी
(C) कारा अधीक्षक (D) सेना अधिकारी

58. 'गूलर का फूल होना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) कभी-कभी दिखाई देना (B) स्पष्ट दिखाई देना
(C) कभी भी दिखाई न देना (D) व्यर्थ की बात करना

59. हेनरी लोपेज का जन्म कब हुआ था?
(A) 1920 (B) 1935
(C) 1936 (D) 1937

60. 'भीड़' शब्द संज्ञा है—
(A) जातिवाचक संज्ञा (B) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(C) द्रव्यवाचक संज्ञा (D) समूहवाचक संज्ञा

61. 'यात्रा' शब्द है—
(A) पुंल्लिग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

62. 'चमक' शब्द है—
(A) पुंल्लिग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

63. महान रूसी कथाकार कौन थे?
(A) हेनरी लोपेज (B) पूतिन
(C) लेव तोल्सलोय (D) इनमें से कोई नहीं

64. 1870–90 के बीच मोपासाँ की लगभग कितनी कहानियाँ प्रकाशित हुई?
(A) 100 (B) 200 (C) 300 (D) 400

65. मैंने भोजन नहीं किया और इसलिए मेरी भूख नहीं मिटी—किस वाक्य का उदाहरण है?—
(A) सरल वाक्य (B) संयुक्त वाक्य
(C) मिश्र वाक्य (D) इनमें से कोई नहीं

66. शुद्ध वाक्य है—
(A) वह बिल्कुल भी बात करना नहीं चाहती थी
(B) उसके स्त्री नहीं है
(C) उसके बेटी नहीं है
(D) यह बात कहने में किसी को संकोच नहीं होगा

67. 'तेरी कुड़माई हो गई' का किस कहानी से संबंध है?
(A) रोज (B) उसने कहा था
(C) तिरिछ (D) जूठन

68. 'रक्षक' शब्द में प्रत्यय है—
(A) र (B) रक्ष (C) अक (D) रअ

69. 'अर्धनारीश्वर' पाठ के लेखक कौन है?
(A) नामवर सिंह (B) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी (D) रामचन्द्र शुक्ल

70. 'पुराण' शब्द का विशेषण है—
(A) पौराणिक (B) धार्मिक (C) पुराणीक (D) पुराना

71. 'यह नया माल है' इस वाक्य में 'नया' शब्द है—
(A) संज्ञा (B) सर्वनाम (C) विशेषण (D) क्रिया

72. भगत सिंह ने कैसी मृत्यु को सुंदर कहा है?
(A) युद्ध के दौरान हुई मृत्यु को
(B) वज्रपात से हुई मृत्यु को
(C) देश सेवा के बदले दी गयी फाँसी को
(D) किसी बीमारी के कारण हुई मृत्यु को

73. 'निराधार' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है?
(A) निरा + धार (B) नि + राधार
(C) निः + आधार (D) निराधा + र

74. 'यशोदा' का सही संधि-विच्छेद क्या होगा?
(A) यशः + दा (B) यश + ओदा
(C) यशो + दा (D) यश + उदा

75. 'रामपुरवा' कहाँ है?
(A) भितिहरवा के पास (B) नवगछिया के पास
(C) राँची के पास (D) इलाहाबाद के पास

76. 'परलोक' शब्द में उपसर्ग है—
(A) पर (B) प (C) ओक (D) परल

77. 'सपरिवार' शब्द में उपसर्ग है—
(A) स (B) सहित (C) सप् (D) सपरि

78. 'मुन्नी' कौन थी?
(A) सुखनी की बेटी (B) रजनी की बेटी
(C) शिवनी की बेटी (D) बिशनी की बेटी

79. मलिक मुहम्मद जायसी की मृत्यु कब हुई?
(A) लगभग 1548 ई॰ (B) लगभग 1540 ई॰
(C) लगभग 1549 ई॰ (D) लगभग 1550 ई॰

80. 'ईमानदार' शब्द का विलोम होगा—
(A) शरीफ (B) बेईमान
(C) भला मानुष (D) दुर्जन

81. 'साकार' का विलोम है—
(A) निराकार (B) कुआकार
(C) बेकार (D) अतिकार

82. 'निश्चय' का सन्धि-विच्छेद है—
(A) निः + चय (B) निश् + चय
(C) निस + चय (D) निश + चय

83. भूषण किस काल के कवि माने जाते है?
(A) रीतिकाल (B) आधुनिक काल
(C) आदिकाल (D) भक्तिकाल

84. 'देवता' का पर्यायवाची शब्द है—
(A) देव (B) पुरुषोत्तम
(C) विप्र (D) अवनी

85. रघुवीर सहाय का जन्म स्थान है—
(A) आगरा (B) मेरठ
(C) लखनऊ (D) प्रयाग

86. 'मलयज' की रचना नहीं है—
(A) न आने वाला काल (B) जूठन
(C) सलाम (D) इनमें से कोई नहीं

87. 'ज्ञात' का विलोम है—
(A) अनजान (B) अज्ञात (C) नासमझ (D) बेज्ञात

88. 'भारत' का विशेषण है—
(A) भरत (B) भारतीय (C) भारतीया (D) भारतों

89. 'सम्पूर्ण क्रांति' के रचनाकार है—
(A) जे॰कृष्णमूर्ति (B) भगत सिंह
(C) जयप्रकाश नारायण (D) इनमें से कोई नहीं

90. चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म हुआ था—
(A) 1880 (B) 1881 (C) 1882 (D) 1883

91. 'रात' का विलोम है—
(A) सुबह (B) दिन (C) सवेरा (D) दोपहर

92. तुलसीदास ने अपने युग की किन दो साहित्यिक भाषाओं को अपनाया?
(A) उर्दू और फारसी (B) संस्कृत और हिन्दी
(C) अवधी और ब्रज (D) अपभ्रंश और प्राकृत

93. जो खाने योग्य हो, वह है—
(A) शुद्ध (B) स्वच्छ (C) खाद्य (D) ग्रहणीय

94. 'कार्य करने वाला'—के लिए एक शब्द है—
(A) कार्यकर्ता (B) कारक (C) कामकार (D) कार्यिक

95. 'नाभादास' का काव्य रचना क्षेत्र था—
(A) हरिद्वार (B) काशी (C) वृन्दावन (D) मथुरा

96. 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' नामक आख्यानक काव्य किसके द्वारा लिखा गया है?
(A) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (B) जयशंकर प्रसाद
(C) तुलसीदास (D) रामधारी सिंह दिनकर

97. 'चन्द्रशेखर' शब्द कौन समास है?
(A) बहुव्रीहि (B) द्विगु (C) तत्पुरुष (D) द्वन्द्व

98. 'रसोईघर' शब्द कौन समास है?
(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय (C) द्वन्द्व (D) अव्ययीभाव

99. 'कवियों के कवि' किसे कहा जाता है?
(A) रघुवीर सहाय को (B) जयशंकर प्रसाद को
(C) मुक्तिबोध को (D) शमशेर बहादुर सिंह को

100. 'अंगूठा चूमना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) इन्कार करना (B) तिरस्कार करना
(C) नासमझी दिखाना (D) खुशामद करना

खण्ड-ब : विषयनिष्ठ प्रश्न

1. किसी एक पर निबंध लिखें— 1 × 8 = 8
(i) दहेज प्रथा (ii) जाड़े की रात
(iii) पुस्तकालय (iv) भारत में आतंकवाद
(v) नारी शिक्षा (vi) समाज-सेवा

2. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें— $2 \times 4 = 8$

(क) नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते। जो फौज छोड़ कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है।

(ख) अगर कोई डेमॉक्रेसी का दुश्मन है, तो वे लोग दुश्मन हैं, जो जनता के शांतिमय कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं, उनकी गिरफ्तारियाँ करते हैं, उनपर लाठी चलाते हैं, गोलियाँ चलाते हैं।

(ग) थपकी दे दे जिसे सुलाया
जिसके लिए लोरियाँ गाई
जिसके मुख पर जरा मलिनता
देख आँख में रात बिताई।

(घ) मखमल टमटम बल्लम तुरही
पगड़ी छत्र चँवर के साथ
तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर
जय-जय कौन कराता है।

3. समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने मोहल्ले में लाउडस्पीकरों के शोर से उत्पन्न कष्ट का वर्णन कीजिए। 8

अथवा,

अपने पिता को एक पत्र लिखिए, जिसमें पुस्तकें खरीदने के लिए रुपये भेजने की प्रार्थना की गई हो।

4. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं पाँचों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें। $2 \times 5 = 10$

(i) लहना सिंह का परिचय अपने शब्दों में दें।
(ii) बापू और नेहरू की किस विशेषता का उल्लेख जेपी ने अपने भाषण में किया है ?
(iii) गाँधी जी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे ?
(iv) लेखक को अब तिरिछ का सपना नहीं आता, क्यों ?
(v) लेखक और मालती के संबंध का परिचय पाठ के आधार पर दें।
(vi) पुंडलीक जी कौन थे ?
(vii) शिक्षा का क्या अर्थ है एवं इसके क्या कार्य हैं ? स्पष्ट करें।
(viii) बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है ?
(ix) 'अजातशत्रु' के रचनाकार कौन है?
(x) कवि अशोक वाजपेयी का जन्म कहाँ हुआ था?

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें। $3 \times 5 = 15$

(i) "हँसते हुए मेरा अकेलापन" शीर्षक डायरी का सारांश लिखें।
(ii) 'अर्धनारीश्वर' निबंध का सारांश लिखें।
(iii) कवि रघुवीर सहाय की जीवनी एवं उनके द्वारा लिखित कविता 'अधिनायक' का सारांश लिखें।
(iv) कवि अशोक वाजपेयी की जीवनी एवं उनके द्वारा संकलित पद 'हार-जीत' का सारांश लिखें।
(v) कवि की स्मृति में "घर का चौखट" इतना जीवित क्यों है?
(vi) लोहा की खोज क्यों की जा रही है ?

6. निम्न में से किसी एक का संक्षेपण करें— $1 \times 4 = 4$

(i) किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरनेवाला साहित्य ही है। इसलिए यह सर्वतोभावेन संरक्षणीय है। यह सब कुछ खोकर यदि हम उसे बचाए रहेंगे, तो फिर इसी के द्वारा हम सब कुछ भी पा सकते हैं। इसे खोकर यदि कुछ पा भी लेंगे तो फिर से इसे कभी न पा सकेंगे। कारण, यह हमारे पूर्वजों का चिरसंचित ज्ञानवैभव ही साहित्य है। अन्याय लौकिक वैभव नश्वर है। यह अविनाशी है। इसलिए इसका जो पल्ला पकड़े रहेगा, वह अमर होगा।

(ii) हाथ की मेहनत से बनायी चीज में जो रस भर आता है वह लोहे के द्वारा बनायी हुई चीज में कहाँ। जिस आलू को मैं स्वयं बोता हूँ, स्वयं पानी देता हूँ, जिसके इर्द-गिर्द घास-पात खोदकर में साफ करता हूँ, उस आलू में जो रस मुझे आता है, वह टिन में बंद किये हुए अचार-मुरब्बे में नहीं आता। मेरा विश्वास है कि जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप में मिल जाती है और उसमें मुर्दा को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है।

व्याख्यासहित उत्तर

खण्ड 'अ'

OMR ANSWER-SHEET

1.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	51.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
2.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	52.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
3.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	53.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
4.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	54.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
5.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	55.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
6.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	56.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
7.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	57.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
8.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	58.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
9.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	59.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
10.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	60.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
11.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	61.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
12.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	62.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
13.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	63.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
14.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	64.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
15.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	65.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
16.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	66.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
17.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	67.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
18.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	68.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
19.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	69.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
20.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	70.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
21.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	71.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
22.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	72.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
23.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	73.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
24.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	74.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
25.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	75.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
26.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	76.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
27.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	77.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
28.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	78.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
29.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	79.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
30.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	80.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
31.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	81.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
32.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	82.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
33.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	83.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
34.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	84.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
35.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	85.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
36.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	86.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
37.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	87.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
38.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	88.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
39.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	89.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
40.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	90.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
41.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	91.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
42.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	92.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
43.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	93.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
44.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	94.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
45.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	95.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
46.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	96.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
47.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	97.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
48.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	98.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
49.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	99.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
50.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	100.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ

ANSWER

1. (C)	2. (A)	3. (B)	4. (C)	5. (A)
6. (A)	7. (A)	8. (B)	9. (B)	10. (C)
11. (B)	12. (A)	13. (B)	14. (D)	15. (C)
16. (D)	17. (C)	18. (B)	19. (D)	20. (D)
21. (A)	22. (A)	23. (C)	24. (B)	25. (D)
26. (A)	27. (A)	28. (D)	29. (B)	30. (B)
31. (B)	32. (D)	33. (A)	34. (D)	35. (A)
36. (A)	37. (B)	38. (B)	39. (B)	40. (A)
41. (D)	42. (C)	43. (D)	44. (C)	45. (B)
46. (C)	47. (C)	48. (A)	49. (C)	50. (D)
51. (D)	52. (B)	53. (C)	54. (A)	55. (A)
56. (B)	57. (C)	58. (C)	59. (D)	60. (D)
61. (B)	62. (B)	63. (C)	64. (C)	65. (B)
66. (D)	67. (B)	68. (C)	69. (B)	70. (A)
71. (C)	72. (C)	73. (C)	74. (A)	75. (A)
76. (A)	77. (A)	78. (D)	79. (A)	80. (B)
81. (A)	82. (A)	83. (A)	84. (A)	85. (C)
86. (A)	87. (B)	88. (B)	89. (C)	90. (D)
91. (B)	92. (C)	93. (C)	94. (A)	95. (C)
96. (B)	97. (A)	98. (A)	99. (D)	100. (D)

खण्ड – ब

1. **(i) दहेज प्रथा**

भारतीय समाज में अनेक बुराइयाँ हैं। दहेज प्रथा उनमें से एक है। यह गरीब वर्ग के लिए बड़ा अभिशाप तथा चुनौती है। हमलोग दहेज के रूप में नगद या विलासितापूर्ण वस्तुओं की माँग करते हैं। यह हमारे समाज की बहुत बड़ी बुराई है। दहेज विवाहित जीवन के सुख को नष्ट करता है। अनेक निर्दोष लड़कियों को इसके कारण अपना बलिदान करना पड़ता है।

दहेज प्रथा हमारे समाज में नई चीज नहीं है। दहेज प्रथा का इतिहास पुराना है। लेकिन, उन दिनों दुल्हन के माता-पिता इसे खुशी से नए जोड़े के आनन्द के लिए देते थे। उस समय दहेज की माँग नहीं की जाती थी। दहेज देना दुल्हन के माता-पिता पर निर्भर करता था। लेकिन, आज दहेज ने भयानक रूप ले लिया है। यह हमारे समाज के लिए एक ज्वलन्त समस्या हो गया है। हमारे समाज में लड़का अपने पद एवं स्थिति के अनुसार बेचा जाता है। दहेज का मूल्य लड़कों के विभिन्न पद स्थिति के अनुसार अलग- अलग तय किया जाता है। लड़की के लिए किसी पद या स्थिति की बाध्यता नहीं है। इस प्रकार, दहेज 'विवाह' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रथा में एक महत्त्वपूर्ण बुराई यह है कि यदि कोई लड़की कम दहेज लाती है, तो उसे तंग किया जाता है। कभी-कभी उसे जलाया भी जाता है। अनेक लड़कियाँ आत्महत्या करती हैं। लड़का के माता-पिता द्वारा उसकी हत्या की जाती है, क्योंकि वे जितना चाहते हैं, उतना दहेज नहीं पाते हैं। इस प्रथा का दूसरा सबसे बुरा भाग यह है कि अनेक ईमानदार लोग अधिक रुपया कमाने के लिए भ्रष्ट हो जाते हैं। वे दहेज के द्वारा अपनी लड़कियों का जीवन सुखी बनाना चाहते हैं।

दहेज प्रथा ने जाति अवरोधों को तोड़ा है और सम्पूर्ण समाज में फैल गई है। यद्यपि दहेज प्रथा के विरुद्ध सख्त कानून है, लेकिन इसका पालन नहीं किया जाता है। सरकार द्वारा दहेज प्रथा के विरुद्ध कानून को सख्ती से क्रियान्वित नहीं किया जाता है। इसलिए लोग इस कानून को नहीं मानते हैं और दहेज लेते हैं।

इस प्रकार, दहेज प्रथा हमारे समाज में एक बड़ी-बुराई है। यह भारतीय समाज के नाम पर कलंक है। हमें दहेज प्रथा विरोधी कानून का पालन करना चाहिए। हमें दहेज के रूप में कोई चीज स्वीकार नहीं करना चाहिए।

(ii) जाड़े की रात

'जाड़ा' शब्द संस्कृत के 'जाड्य' शब्द से बना है जिसका अर्थ ठंढक या शीतलता होता है। 'जाड़ा' शब्द का प्रयोग सामान्यत: मौसम-विशेष के लिए किया जाता है। भारत में वैसे ऋतुएँ तो छह हैं, जिनका समय दो-दो माह होता है। लेकिन मौसम मुख्यत: तीन हैं—गर्मी, वर्षा और जाड़ा। यों भारत को गरम देश माना जाता है, जबकि यहाँ छ: महीने गर्मी और चार महीने जाड़ा पड़ता है। ये दोनों चरम पर ही होते हैं। जाड़े का मौसम अपने में तीन ऋतुओं को समेट लेता है—शरद, हेमंत और शिशिर। कुछ लोग कहते हैं कि जाड़े में लोग अधिक काम करते हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि जाड़े की रात लोगों को जड़ बना देती है। संस्कृत 'जाड्य' का एक अर्थ 'जड़ता' या 'निष्क्रियता' भी होता है, जो इस मौसम के लिए सार्थक प्रतीत होता है। जाड़े की रात में जिधर देखिए, उधर सुनसान। संध्या सात-आठ बजते ही बाजार श्मसान-सा नजर आता है। गाँवों में दूर-दूर कहीं-कहीं कोई प्रकाश दिखायी पड़ता है। ठंढ से काँपते हुए सियार और कुत्ते की आवाज भी ठिठुर जाती है। अत: जाड़े की रात सचमुच अपना नाम सार्थक करती है। किन्तु ढाढ़स इसी से बँधती है कि कभी-न-कभी यह कालरात्रि अवश्य टलेगी और सुनहली सुबह आएगी। मीठी-मीठी धूप सोना लुटाएगी, बेचारे गरीब इसे लूट कर निहाल होंगे, चहकेंगे, गायेंगे और दुख-दर्द भूल जाएँगे।

जाड़े की सुबह भले ही किसी कवि को फूले हुए कास के श्वेत वसन धारण किए, मस्त हंसों की मीठी बोली के सुहावने बिछुए पहने, पके हुए धान के मनोहर शरीर वाली तथा कमल के अनुपम मुखवाली दुल्हन-सी लगती हो, किन्तु जाड़े की रात किसी शैतान की आकृति की तरह अत्यन्त भयावह लगती है। वह गरीबों को सताती है, काटे नहीं कटती। सूरज का गोला भी जल्दी निकलता नहीं। कनक-कुबेरों, सामंतों और सरदारों के पास इतने सामान रहते हैं कि शिशिर का शीत उनका कुछ नहीं कर पाता। किन्तु साधारण गरीब लोग, जिन्हें भरपेट भोजन नसीब नहीं, तन ढँकने को गरम कपड़े की बात कौन कहे, साधारण कपड़ा भी नहीं है, तीर की तरह भेदती ठंढक से उनकी हालत बड़ी दर्दनाक हो जाती है।

जाड़े की रात मानों सम्पन्नता के स्वर्ग और विपन्नता के नरक के दृश्यों को दिखाने वाली यंत्र-नलिका हो। हमारे देश में एक ओर अमीरी का इन्द्र-वैभव है तो दूसरी ओर गरीबी का शैशव—इसे दिखाने वाली जाड़े की रात है। किसी के लिए जाड़े की रात मधु-यामिनी है। वातानुकूलित कक्षों में मखमल की गद्दी पर जिन्हें दरिद्रता का सर्पदंश नहीं लगता, जिन्हें अभाव की सूईयों की चुभन नहीं सहनी पड़ती, उनके लिए तो जाड़े की रात ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। किन्तु जिन्हें न तन ढकने का कपड़ा है, न पेट भरने को अन्न, फुटपाथों का आकाश ही जिनके आवास की छत है, ऐसे अभागों के लिए जाड़े की रात प्रकृति के सबसे बड़े अभिशाप के रूप में आती है। यह सुरसा की जमुहाई से भी लम्बी, कुम्भकर्ण की नींद से भी गहरी ठहरती है।

(iii) पुस्तकालय

मानव शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए जिस प्रकार हमें पौष्टिक तथा संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए ज्ञान की प्राप्ति आवश्यक है। मस्तिष्क को बिना गतिशील बनाये ज्ञान प्राप्ति नहीं किया जा सकता। ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यालय जाकर गुरु की शरण लेनी पड़ती है। इसी तरह ज्ञान अर्जित करने के लिए पुस्तकालय की सहायता लेनी पड़ती है। लोगों को शिक्षित करने तथा ज्ञान देने के लिए एक बड़ी राशि व्यय करनी पड़ती है। इसलिए स्कूल कॉलेज खोले जाते हैं और उसमें पुस्तकालय स्थापित किये जाते हैं जिससे कि ज्ञान चाहने वाला व्यक्ति सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सके।

पुस्तकालय के दो भाग होते हैं—वाचनालय तथा पुस्तकालय। वाचनालय में देशभर से प्रकाशित दैनिक अखबार के अलावा साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं का पठन केन्द्र है। यहाँ से हमें दिन प्रतिदिन की घटनाओं की जानकारी मिलती है। पुस्तकालय विविध विषयों और इनकी विविध पुस्तकों का भण्डार गृह होता है। पुस्तकालय में दुर्लभ से दुर्लभ पुस्तक भी मिल जाती है।

भारत में पुस्तकालयों की परम्परा प्राचीनकाल से ही रही है। नालन्दा, तक्षशिला के पुस्तकालय विश्वभर में प्रसिद्ध थे। मुद्रणकला के साथ ही भारत में पुस्तकालयों की लोकप्रियता बढ़ती चली गई। दिल्ली में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की सैकड़ों शाखाएँ हैं। इसके अलावा दिल्ली में एक नेशनल लाइब्रेरी भी है।

पुस्तकें मनुष्य की मित्र होती हैं। एक ओर जहाँ वे हमारा मनोरंजन करती हैं वहीं वह हमारा ज्ञान भी बढ़ाती हैं। हमें सभ्यता की जानकारी भी पुस्तकों

से ही प्राप्त होती है। पुस्तकें ही हमें प्राचीनकाल से लेकर वर्तमानकाल के विचारों से अवगत कराती हैं। इसके अलावा पुस्तकें संसार के कई रहस्यों से परिचित कराती हैं। कोई भी व्यक्ति एक सीमा तक ही पुस्तक खरीद सकता है। सभी प्रकाशित पुस्तकें खरीदना सबके बस की बात नहीं है। इसलिए पुस्तकालयों की स्थापना की गई। पुस्तकालय का अर्थ है पुस्तकों का घर। यहाँ हर विषय की पुस्तकें उपलब्ध होती हैं। इनमें विदेशी पुस्तकें भी शामिल होती है। विद्यालय की तरह पुस्तकालय भी ज्ञान का मंदिर है।

(iv) भारत में आतंकवाद

एक समय था जब भारत के पवित्र धरातल पर द्वैतवाद की मन्दाकिनी में भक्ति के सुगन्धित पुंज विकसित होते थे। चारों ओर शान्ति का साम्राज्य होता था। विश्व भर के लिए भारत शान्तिदूत था। सम्राट अशोक ने ''अहिंसा परमो धर्म:'' का संदेश देकर अपने पुत्र और पुत्री को तिब्बत, चीन, श्रीलंका आदि देशों में भेजकर शान्ति स्थापित की थी। देश में अनेक घटनायें घटीं, सत्ता परिवर्तन हुए, विदेशी आक्रमण हुए शताब्दियों तक भारत परतंत्र रहा किन्तु उसका शान्ति का स्वरूप नहीं बदला, यहाँ तक स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य भी अहिंसा द्वारा ही प्राप्त किया। स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवाद अथवा आतंकवाद का कोई स्थान नहीं था।

किन्तु स्वतंत्र भारत को अपने शैशवकाल से ही आतंकवाद रूपी दानव का सामना करना पड़ा। कभी काश्मीर में पड़ोसी देश के बहकावे में आकर और उकसाने के फलस्वरूप काश्मीर घाटी में निर्दोष व्यक्तियों की हत्या, कभी पंजाब में खालिस्तान के नाम पर किये गए फसाद, कभी पूर्वोत्तर राज्यों में उल्फा संगठनों का उपद्रव तो कभी लिट्टे समर्थकों का बहशीपन भारतीय जनता को सहन करने पड़े। 21 मई, 1991 को लिट्टे समर्थित मानव बम के रूप में किये गए विस्फोट के फलस्वरूप भारत को अपने लोकप्रिय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की बलि देनी पड़ी। 13 मार्च, 1993 को मुम्बई शेयर बाजार जैसे भीड़-भाड़ वाले कई स्थानों पर 13 श्रृंखलाबद्ध विस्फोट किए गए जिनके फलस्वरूप 257 व्यक्ति मारे गऐ और 1400 बुरी तरह घायल हुए। 13 वर्ष तक मुकदमा चला जिसमें 124 अभियुक्तों को दोषी पाया गया जिन्हें विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अपराध की संगीनता के आधार पर सजा सुनाई गई। जनवरी-फरवरी 1998 में तीन स्थानों पर जोरदार बम विस्फोट हुआ। ये घटनायें पूर्वोत्तर राज्यों में तथा काश्मीर में होने वाली घटनाओं के अतिरिक्त थीं किन्तु विश्व समुदाय इस ओर से अपनी आँखें मूँद कर मूकदर्शी बना रहा, महाशक्तियाँ इसकी अनदेखी करती रहीं और परिणाम हुआ 11 सितम्बर, 2००1 को संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यन्त सुनियोजित ढंग से किया गया। आतंकवादी आक्रमण जिसके फलस्वरूप न्यूयार्क स्थित विश्व व्यापार संगठन की जुड़वाँ टावर्स ध्वस्त हो गयीं।

अब संयुक्त राज्य अमरीका को आतंकवाद का अनुभव हुआ। जिस देश को भारत अकेला गत दो दशक से झेलता आ रहा था और महाशक्तियों तथा विकसित पश्चिमी राष्ट्रों से सहानुभूति के दो शब्द भी नहीं मिल रहे थे जिसे भारत का घरेलू मामला कहते थे अब अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई। समूचा विश्व आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट हो गया। भारत को तो इस संघर्ष में साथ होना ही था। आतंकवादियों और उनके अड्डो की तलाश शुरू हुई और ज्ञात हुआ कि लश्करे तइबा और उसका सरगना ओसामा बिन लादेन द्वारा आयोजित था यह आक्रमण। अत: अफगानिस्तान जो तालिबान के आधिपत्य में था और ओसामा बिन लादेन की शरणस्थली था पर सैनिक कार्यवाही की गई। अफगानिस्तान को तालिबान के चंगुल से मुक्त कराया गया। अमेरिकी ड्रोण हवाई हमले में लादेन मारा गया।

13 दिसम्बर, 2001 को पाँच हथियारबंद आतंकियों ने भारतीय संसद भवन पर उस समय आक्रमण किया जब संसद का अधिवेशन चल रहा था। किन्तु भारतीय सुरक्षा बलों की सतर्कता से आक्रमण विफल हो गया और पाँचों आतंकवादी मारे गए। इस मुझभेड़ में सुरक्षा बल के छह जवान और एक माली शहीद हो गए। खोजबीन के बाद निश्चित हो गया कि इस आक्रमण के तार पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन से जुड़े हुए थे।

आतंकवाद वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय समस्या न होकर वैश्विक समस्या बनकर उभरा है। भारत में यह आतंकवाद पाकिस्तान समर्थित होने के कारण भयावह रूप में प्रकट हो रहा है। राजनीतिक, कूटनीतिक, खेल कूटनीति, वैचारिक प्रयास आदि के माध्यम से इस आतंकवाद को दमित करने का प्रयास किया जा रहा है। आंतरिक आतंकवाद की समस्या का जनसहभागिता से दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

(v) नारी शिक्षा

स्त्री एवं पुरूष समाजरूपी रथ के दो पहिए हैं। जिस तरह रथ के चलने में दोनों पहियों का समान हाथ होता है, उसी प्रकार समाज की सुसंचरणशीलता में स्त्री और पुरूष का समान हाथ होता है। इन दोनों में एक की भी निर्बलता समाजरूपी रथ की गति को बाधित कर देती है। अत:, समाज की सुव्यवस्थित प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि इसके सभी स्त्री-पुरूष साक्षर और शिक्षित हो। केवल पुरूषवर्ग के शिक्षित होने से समाज और देश का कल्याण नहीं हो सकता। जिस देश की स्त्रियाँ अशिक्षित होती हैं, उस देश की प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्राचीन भारत में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। पुरूषों की तरह स्त्रियाँ भी सुशिक्षित होती थीं। पर, मध्यकाल में (मुगलों के शासनकाल में) स्त्रियों को शिक्षा से अलग रखा गया। स्वतंत्रता के लिए गए संघर्ष में स्त्रियों की शिक्षा की अनिवार्यता महसूस की गई। राजा राममोहन राय तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने आधुनिक भारत के निर्माण में स्त्रियों का सहयोग अनिवार्य माना। इसलिए उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा पर जोर दिया। महात्मा गाँधी ने भी स्त्री-शिक्षा को समाज और देश के उत्थान के लिए आवश्यक माना।

आज भारत ने स्त्री शिक्षा के महत्व को पहचान लिया है। इसीलिए तो अब यह प्रश्न नहीं उठाया जाता कि स्त्री-शिक्षा आवश्यक है या नहीं। हाँ, इस संदर्भ में यह प्रश्न उठाया जाता है कि क्या स्त्रियों और पुरूषों की शिक्षा-प्रणाली एक होनी चाहिए या उनकी प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न ? मेरी दृष्टि में शिक्षा की विधि दोनों के लिए एक ही होनी चाहिए।

आधुनिक भारत में नारियाँ शिक्षित होकर जीवन के विविध क्षेत्रों में सक्रिय हैं। पर, आज भी पुरुष-मनोविज्ञान स्त्री-मनोविज्ञान पर हावी है, जिसके चलते स्त्रियों के अपेक्षित विकास में अनेक कठिनाइयाँ आ रही हैं। भारतीय समाज में आज भी अंधविश्वास जड़ से दूर नहीं हुए हैं, अत: स्त्री-शिक्षा पर हमारा जितना ध्यान केन्द्रित होना चाहिए था, उतना नहीं हो पा रहा है। आर्थिक विपन्नता स्तर पर लड़कियों की नि:शुल्क शिक्षा देने की योजना बनाई है। इस योजना के कार्यान्वयन से भारत में स्त्री-शिक्षा का अपेक्षित विस्तार होगा।

(vi) समाज-सेवा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है। जिस प्रकार मनुष्य को अपने परिवार के प्रति कुछ कर्तव्य होते हैं, उसी प्रकार उसे समाज के प्रति भी कुछ कर्तव्य होते हैं। इन कर्तव्यों को करना ही समाज-सेवा है। लेकिन, प्रत्येक व्यक्ति समूचे समाज के बारे में नहीं सोचता है। वह केवल अपने और अपने परिवार के बारे में सोचता है। ऐसे व्यक्ति को असामाजिक कहा जाता है।

हमारे समाज में कुछ आदमी हैं, जो सच्चे सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। एक सच्चा सामाजिक कार्यकर्त्ता सभी लोगों के साथ एक समान भलाई का कार्य करता है। वह स्वार्थरहित होता है और उसे अपनी सेवा के लिए उसे किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं होती है। वह इसका लाभ लेना नहीं चाहता। वह समाज की भलाई के लिए हमेशा कुछ करना चाहता है। इस प्रकार, एक समाज सेवक सामान्य लोगों के भलाई के लिए सबकुछ करता है।

समाज-सेवा के कई रूप हैं। यदि हमलोग काम करना चाहें तो बीमारों की सेवा कर सकते हैं, गरीबों की सहायता कर सकते हैं तथा जरूरतमंद लोगों को सलाह दे सकते हैं। हमारे देश में बहुत-से लोग अशिक्षित हैं। हमलोग उन्हें शिक्षित कर सकते हैं। अपने समाज को अशिक्षित लोगों को शिक्षित करना एक महान् समाज-सेवा है। सड़कों तथा गलियों की सफाई करना भी एक समाज सेवा है। ईमानदारीपूर्वक कर्तव्य करना एक प्रकार की समाज सेवा है। इस प्रकार की समाज-सेवा हमारे जीवन को खुशहाल तथा सक्रिय बनाएगी।

इस प्रकार, हमलोग कह सकते है कि हमलोग बिना सहयोग और मदद के अपने समाज में नहीं रह सकते। हमलोग अपने समाज में एक-दूसरे की मदद करते हैं। इसलिए, समाज-सेवा अवश्य ही शिक्षा का एक हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

2. (क) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश द्वारा लिखित ''सिपाही की माँ'' शीर्षक एकांकी से ली गयी है।

मानक की प्रतीक्षा में बिशनी और मुन्नी पड़ोसन कुंती से बातचीत कर रही है। इसी बीच दो नौजवान लड़कियाँ भिक्षा माँगने बिशनी के समक्ष आ जाती हैं। बातचीत की क्रम में मालूम होता है कि दोनों लड़कियाँ बर्मा में होनेवाली लड़ाई से जान बचाकर आयी है। बर्मा में अंग्रेजी और जापानी सेना के बीच युद्ध चल रही है। मानक भी बर्मा की लड़ाई में एक फौजी है। तर्क-वितर्क के प्रसंग में बर्मी लड़कियाँ यह बताना चाहती है कि बर्मा से कोई फौजी भागकर नहीं आ सकता और कहती है—"नहीं फौजी वहाँ लड़ने के लिये हैं। वे नहीं भाग सकते जो फौज छोड़कर भागता है उसे गोली मार दी जाती है।"

- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने सेना के नियमों एवं सेना से भागने पर फौजियों के साथ व्यवहार की चर्चा की है। लेखक कहना चाहता है कि एक सही फौजी युद्ध से भागता भी नहीं है और उसके भागने का परिणाम भी बड़ा बुरा होता है।

(ख) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ लोकनायक जयप्रकाश नारायण की 'सम्पूर्ण क्रांति' शीर्षक भाषण के अंश से ली गई है। प्रस्तुत पंक्तियों में जयप्रकाश नारायण लोकतंत्र के दुश्मनों का वर्णन किया है।

जयप्रकाश की सभा में अपार भीड़ थीं लेकिन बहुत लोगों को ट्रेनों में रोका गया, बसों से उतारा गया, जेलों में डाला गया। सरकार जनता से घबड़ा गई थी। जेपी का कहना था कि लोकतंत्र जनता का शासन कहलाता है। पटना लोगों की राजधानी है। यह देश भी जनता का है। सरकार लोकतंत्र की दुहाई देती है लेकिन यही लोग लोकतंत्र के दुश्मन हैं। पुलिस एवं प्रशासन शांतिमय जनता पर लाठियाँ चलाती हैं, गोलियाँ चलाती हैं, कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं।

जनता इस डेमॉक्रेसी को बदलना चाहती है, छात्र एवं युवा इसका नेतृत्व करेंगे।

(ग) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसकी रचनाकार सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। कवयित्री पुत्र विच्छोह से मर्माहित है, अपनी कारुणिक पीड़ा में उसे विगत की स्मृतियाँ झकझोर देती हैं।

कवयित्री अपने पुत्र को थपकी देकर सुलाने का प्रयास करती है। उसे लोरियाँ (गीत) गाकर सुनाती है। उसके मुख पर उदासी देखकर रात को जागकर व्यतीत किया।

(घ) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ रघुवीर सहाय रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से ली गई है। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बदली हुई जनतांत्रिक व्यवस्था में भी सत्ताधारी वर्ग के राजसी ठाट-बाट एवं रोब-दाब का वर्णन किया है।

कवि प्रश्न पूछता है कि वह कौन व्यक्ति है जो मखमल, टमटम, बल्लम, तुरही, पगड़ी छतरी एवं चँवर लगाकर तोप के गोले दागकर, ढोल नगाड़ा बजाकर जय-जयकार करवाता है। इसका अर्थ है कि अभी जनप्रतिनिधि अधिनायकवादी की भूमिका निभा रहे हैं। वे जनता का सेवक नहीं, राजसी ठाट-बाट में लिप्त तानाशाह हैं। यह आजाद देश के लिए एक चिंता का विषय है। कवि व्यंग्य करते हुए एक कटु सत्य का वर्णन करता है कि क्या वे सच्चे जनप्रतिनिधि हैं अर्थात् नहीं हैं।

3. सेवा में,

प्रधान संपादक,
हिन्दुस्तान,
पटना।

श्रीमान,

आपके प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के माध्यम से मोहल्ले में लाउड-स्पीकरों के शोर का वर्णन करना चाहता हूँ। कृपया 'लोक-वाणी' शीर्षक स्तंभ में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

आजकल हमारे मोहल्ले जगन्नाथपुर में चारों ओर लाउड-स्पीकरों के शोर के कारण मोहल्ले वालों का जीना दूभर हो गया है। मोहल्ले में एक जगन्नाथ भगवान का मंदिर है और एक गुरुद्वारा। ऐसा लगता है कि दोनों में होड़ लगी है कि कौन अधिकाधिक ऊँची आवाज में उस सोते हुए बहरे प्रभु को जगाकर अपनी राम-कहानी सुना सकता है। धर्म-ग्रंथों से कथा, संकीर्तन अथवा गुरुवाणी का बखान प्रातः चार बजे से ही प्रारंभ हो जाता है तथा यह सिलसिला बिना रुके देर गए रात तक चलता रहता है। यह शोर इतना तीखा और तेज होता है कि घर के कामकाज में भी बाधा पड़ती है तथा पढ़ने वाले बच्चों की कठिनाई का तो केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है।

आपके पत्र के माध्यम से मैं उन लोगों तक अपनी तथा मोहल्ले की व्यथा पहुँचाना चाहता हूँ, जिन्हें कानों पर अनेक बार कहने के बावजूद जूँ तक नहीं रेंगती तथा जिनको अब स्वयं जाकर कहना आत्म-सम्मान के विरुद्ध लगता है।

भवदीय

कृपानाथ पाठक
.... मोहल्ला
.... नगर।

दिनांक : 14 जून, 2024

अथवा,

परीक्षा-भवन,
.... केन्द्र
1 नवम्बर, 2024

पूजनीय पिताजी,
सादर प्रणाम।

आशा है, आप व घर के अन्य सभी सदस्य सकुशल व सानंद होंगे। इस बार मैं आपको पत्र जल्दी न भेज सका, क्योंकि मेरी परीक्षा हो रही थी। उसकी तैयारी में लगा रहा। मेरी संस्कृत की परीक्षा इस बार इसलिए कुछ ढीली रह गई, क्योंकि मेरे पास संस्कृत व्याकरण की अच्छी पुस्तकें नहीं थी। आपसे प्रार्थना है कि संस्कृत व्याकरण की अच्छी पुस्तक खरीदने के लिए आप मुझे 200 रुपये भेज दें। मैं एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ द्वारा प्रकाशित संस्कृत व्याकरण एवं रचना की पुस्तकें खरीदना चाहता हूँ। इन पुस्तकों की प्रशंसा मेरे अन्य सहपाठियों ने भी की है।

मेरी ओर से पूज्या माताजी को सादर चरणवंदना। अनिल तथा अनीता को प्यार।

मेरे योग्य कोई सेवा हो, तो अवश्य लिखें। पत्रोत्तर शीघ्र दें तथा रुपये भी जल्दी भिजवाएँ।

आपका सुपुत्र
रोहित

4. (i) लहना सिंह ब्रिटिश सेना का एक सिक्ख जमादार है। उन्हें भारत से दूर विदेश (फ्रांस) में जर्मन सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजा गया है। वह एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक है। अदम्य साहस, शौर्य एवं निष्ठा से युक्त वह युद्ध के मोर्चे पर डटा हुआ है। विषम परिस्थितियों में भी कभी वह हतोत्साहित नहीं होता। अपने प्राणों की परवाह किए बिना वह युद्धभूमि में खंदकों में रात-दिन पूर्ण तन्मयता के साथ कार्यरत रहता है। कई दिनों तक खंदक में बैठकर निगरानी करते हुए जब वह ऊब जाता है तो एक दिन वह अपने सूबेदार से कहता है कि यहाँ के इस कार्य (ड्यूटी) से उसका मन भर गया है, ऐसी निष्क्रियता से वह अपनी क्षमता का प्रदर्शन नहीं कर पा रहा है। वह कहता है—**"मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए, फिर सात जर्मन को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।"** उनके इन शब्दों में दृढ़ निश्चय एवं आत्मोसर्ग की भावना निहित है। वह शत्रु से लोहा लेने के लिए इतना ही उत्कंठित है कि उसका कथन जो इन शब्दों में प्रकट होता है—**"बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही।"** शत्रु की हर चाल को विफल करने की अपूर्व क्षमता एवं दूरदर्शिता उसमें थी।

(ii) जयप्रकाश कहते हैं कि जब हम नौजवान थे तब उस जमाने में लेकिन यह जुर्रत होती थी बापू के सामने हम कहते थे कि हम नहीं मानते हैं बापू आपकी यह बात और बापू में इतनी महत्ता थी, इतनी महान्ता थी कि वे बुरा नहीं मानते थे। फिर भी बुलाकर हमें प्रेम से समझाना चाहते थे, समझाते थे। जेपी कहते हैं कि जवाहरलाल मुझे मानते बहुत थे। मैं उनका बड़ा आदर और प्रेम करता था परन्तु उनकी कटु आलोचना भी करता था। उनमें बड़प्पन था। अक्सर वे हमारी आलोचनाओं का बुरा नहीं माना। उनके साथ जो मतभेद था वह परराष्ट्र की नीतियों को लेकर था।

(iii) गाँधी जी शिक्षा का मतलब सुसंस्कृत बनाने और निष्कलुष चरित्र निर्माण समझते थे। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आचार्य पद्धति के समर्थक थे अर्थात् बच्चे सुसंस्कृत और निष्कलुष चरित्र वाले व्यक्तियों के सानिध्य से ज्ञान प्राप्त करें। अक्षर ज्ञान को वे इस उद्देश्य की प्राप्ति में विधेय मात्र मानते थे।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को वे खौफनाक और हेय मानते थे क्योंकि शिक्षा का मतलब है—बौद्धिक और चारित्रिक विकास, लेकिन यह पद्धति उसे कुंठित करती हैं। इस पद्धति में बच्चों को दस्तावेज रटाया जाता है ताकि आगे चलकर वे क्लर्क का काम कर सकें, उनका सर्वांगीण विकास से कोई सरोकार नहीं है।

जीविका के लिए नये साधन सीखने के इच्छुक बच्चों के लिए औद्योगिक शिक्षा के पक्षधर थे। तात्पर्य यह न था कि हमारी परंपरागत व्यवसाय में खोट है वरन् यह कि हम ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग अपने पेशे और जीवन को परिष्कृत करने में करें।

(iv) लेखक को अब तिरिछ का सपना नहीं आने का कारण लेखक को सपना सत्य प्रतीत होना था। परन्तु अब लेखक विश्वास करता है कि मैं विश्वास करना चाहता हूँ कि यह सब सपना है। अभी आँख खोलते ही सब ठीक हो जाएगा।

इससे पहले लेखक को सपने की बात प्रचलित विश्वास सपने सच हुआ करते सत्य प्रतीत होती थी। लेखक फैंटेसी में जीता था परन्तु अनुभव से यह जान गया कि सपना बस सपना भर हैं। लेखक ने जटिल यथार्थ को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करने के लिए दुःस्वप्न का प्रयोग किया है। परन्तु जेसे ही लेखक का भ्रम टूटता है तो उसे डर नहीं लगता और तिरिछ के सपने नहीं आते।

(v) लेखक मालती के दूर के रिश्ते का भाई है किन्तु लेखक का संबंध सख्य का ही रहा है। लेखक और मालती बचपन में एक साथ इकट्ठे खेले हैं, लड़े हैं और पिटे भी हैं। लेखक की पढ़ाई भी मालती के साथ ही हुई है। लेखक और मालती का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति सख्य की स्वेच्छा और स्वच्छंदता भरा रहा है। कभी भ्रातृत्व के रूप में या कभी किसी और रूप में। कभी बड़े-छोटेपन के बंधनों में नहीं बंधे।

(vi) पुंडलीक जी भितिहरवा आश्रम विद्यालय के शिक्षक थे। गाँधीजी ने उन्हें बेलगाँव से सन् 17 में बुलाया था शिक्षा देने और ग्रामीणों के भय दूर करने के लिए।

पुंडलिक जी, गाँधीजी के आदर्शों को सच्चे दिल से मानने वाले बड़े ही निर्भय पुरुष थे। पहले एक कायदा था कि साहब जब आएँ तो गृहपति उसके घोड़े की लगाम पकड़े। एक दिन एमन साहब, जो उस समय बड़े अत्याचारी थे आए तो पुंडलिकजी ने कहा, "नहीं, उसे आना है तो मेरी कक्षा में आए, मैं लगाम पकड़ने नहीं जाऊँगा।" पुंडलिक जी ने गाँधी जी से सीखी निर्भीकता गाँव वालों को दी। यही निर्भिकता चंपारण अभियान की सबसे बड़ी देन है।

(vii) शिक्षा का अर्थ है जीवन के सत्य से परिचित होना और सम्पूर्ण जीवन की प्रक्रिया को समझने में हमारी मदद करना।

शिक्षा का कार्य केवल मात्र कुछ नौकरियों और व्यवसायों के योग्य बनाना ही नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण जीवन की प्रक्रिया को बाल्यकाल से ही समझाने में सहयोग करना है एवं स्वतंत्रतापूर्वक परिवेश हेतु प्रेरित करना है।

(viii) हम जानते हैं कि बरसात में पानी आकाश से धरती पर गिरकर उसे रसभरी बनाती है। इसके पहले धरती गर्मी की प्रचंडता के कारण पानी के लिए तरसती रहती है। धरती जब पानी से भर जाती है तो पूरी धरती हरी-भरी रसभरी हो जाती है इसलिए बरसात को सरस (रस के साथ) कहा जाता है। यहाँ दूसरा अर्थ यह ध्वनित होता है कि धरती पर जीवन का नया संचार हो जाता है जिससे धरती सरस हो जाती है।

(ix) जयशंकर प्रसाद

(x) दुर्ग, छत्तीसगढ़

5. (i) "हँसते हुए मेरा अकेलापन" शीर्षक डायरी मलयज की एक उत्कृष्ट रचना है। मलयज अत्यन्त आत्मसजग किस्म के बौद्धिक व्यक्ति थे। डायरी लिखना मलयज के लिए जीवन जीने के कार्य कैसा था। वे डायरी मलयज के समय की उथल-पुथल और उनके निजी-जीवन की तकलीफों बेचैनियों के साथ एक गहरा रिश्ता बनाती हैं। इस डायरी में एक औसत भारतीय लेखक के परिवेश को हम उसकी समस्त जटिलताओं में देख सकते हैं।

पाठ्य-पुस्तक में प्रस्तुत डायरी के अंश की प्रथम डायरी में मलयज ने प्रकृति एवं मानसिक के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। मिलिट्री की छावनी में वृक्ष काटे जा रहे हैं। लेखक वृक्षों के एक गिरोह में उनकी एकात्मकता का संकेत देता है।

दूसरे दिन की डायरी में लेखक ने मनुष्य के जीवन की तुलना खेतों की फसलों से की है। मनुष्य का जीवन फसल के समान बढ़ता, पकता एवं कटता दिखायी देती है। तीसरे दिन की डायरी में लेखक ने चिट्ठी की उम्मीद में और चिट्ठी नहीं आने पर अपनी मनोदशा का वर्णन किया है। चिट्ठी नहीं आने पर एक अजीब-सी बेचैनी मन में आती है।

चौथी डायरी में लेखक ने लेखक बलभद्र ठाकुर नामक एक लेखक का चित्रण किया है और बताने का प्रयास किया है कि एक लेखक कितना सरल एवं मिलनसार होता है। अपनी रचनाओं पर लेखक को गर्व होता है, उसका सहज चित्र इस डायरी में प्रस्तुत है। कौसानी में कुछ दिनों तक लेखक का प्रवास बड़ा ही आनन्ददायक रहा। दो शिक्षकों का चित्रण उनके सहज एव सामाजिक स्वभाव को दिखलाता है। पाँचवी डायरी में भी लेखक ने कौसानी के प्राकृतिक एवं शांत वातावरण का चित्रण किया है।

छठी डायरी में मलयज ने एक सेब बेचनेवाली किशोरी का चित्रण बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया है। किशोरी इतनी भोली थी कि सेव बेचने में उसका भोलापन परिलक्षित होता है। सातवीं डायरी में मलयज यथार्थवादी दिखायी देते हैं। उनके अनुसार मनुष्य यथार्थ को रचता भी है और यथार्थ में जीता भी है। उनके अनुसार रचा हुआ यथार्थ भोगे हुए यथार्थ से अलग है। बाल-बच्चे रचे हुए यथार्थ हैं। वे सांसारिक वस्तुओं को भोग करते हैं। उनके अनुसार रचने और भोगने का रिश्ता एक द्वंद्वात्मक रिश्ता है।

आठवीं डायरी में लेखक ने शब्द एवं अर्थ के बीच निकटता का वर्णन किया है। लेखक का कहना है कि शब्द अधिक होने पर अर्थ कम होने लगता है और अर्थ की अधिकता में शब्दों की कमी होने लगती है अर्थात् शब्द अर्थ में और अर्थ शब्द में बदले चले जाते हैं।

नवीं डायरी में लेखक ने सुरक्षा पर अपना विचार व्यक्त किया है। व्यक्ति की सुरक्षा रौशनी में हो सकती है, अँधेरे में नहीं । अँधेरे में सिर्फ छिपा जा सकता है। सुरक्षा चुनौती को झेलने में ही है, बचाने में नहीं। अतः, आक्रामक व्यक्ति ही अपनी सुरक्षा कर सकता है। बचाव करने में व्यक्ति असुरक्षित होता है।

दसवीं डायरी में लेखक ने रचना और दस्तावेज में भेद एवं दोनों में पारस्परिक सम्बंध की चर्चा की है। लेखक के अनुसार दस्तावेज रचना का कच्चा माल है। दस्तावेज रचनारूपी करेंसी के वास्तविक मूल्य प्रदान करनेवाला मूलधन है।

ग्यारवीं डायरी में लेखक ने मन में पैदा होने वाले डर का वर्णन किया है। लेखक अपने को भीतर से डरा हुआ व्यक्ति मानता है। मन का हर तनाव पैदा करता है, संशय पैदा करता है। किसी की प्रतीक्षा की घड़ी बीत जाने पर मन में डर पैदा होता है। डर कई प्रकार के होते हैं। मनुष्य जैसे-जैसे जीवनरूपी समस्याओं से घिरता जाता है, उसके मन में डर की मात्रा भी बढ़ती जाती है।

अंतिम डायरी में लेखक ने जीवन में तनाव के प्रभाव का वर्णन किया है। मनुष्य जीवन में संघर्षों का सामना करते समय तनाव से भरा रहता है।

इस प्रकार प्रस्तुत डायरी के अंश में मलयज ने अपने जीवन के संघर्षों एवं दुखों की ओर इशारा करते हुए मानव जीवन में पायी जानेवाली सहज समस्याओं का चित्रण बड़ी ही कुशलता से किया है। एक व्यक्ति को कितना खुला, ईमानदार और विचारशील होना चाहिए-इस भाव का सहज चित्रण लेखक ने अपनी डायरी में प्रस्तुत किया है। व्यक्ति के क्या दायित्व हैं और अपने दायित्वों के प्रति कैसा लगाव, कैसी सन्निधता होनी चाहिए—ये सारे भाव प्रस्तुत डायरी में स्पष्ट रूप से चित्रित हैं।

(ii) दिनकर अर्द्धनारीश्वर निबंध के माध्यम से यह बताते हैं कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते अर्थात् नरों में नारियों के गुण आएँ तो इसमें उनकी मर्यादा हीन नहीं होती बल्कि उसकी पूर्णता में वृद्धि होती है। दिनकर को यह रूप कही देखने को नहीं मिलता। इसलिए वे क्षुब्ध हैं। उनका मानना है कि संसार में सर्वत्र पुरुष हैं और स्त्री है। वे कहते हैं कि नारी समझती है कि पुरुष के गुण सीखने से उसके नारीत्व में बट्टा लगेगा। इसी प्रकार पुरुष समझता है कि स्त्रियोचित गुण अपनाकर वह स्त्रैण हो जायेगा। इस विभाजन से दिनकर दुखी है। यही नहीं भारतीय समाज को जाननेवाले तीन बड़े चिंतकों रवीन्द्रनाथ, प्रेमचंद, प्रसाद के चिंतन से भी दुखी हैं। दिनकर मानते हैं कि यदि ईश्वर ने आपस में

धूप और चाँदनी का बँटवारा नहीं किया तो हम कौन होते हैं, आपसी गुणों को बाँटने वाले। वे नारी के पराधीनता का संक्षिप्त इतिहास बताने के संदर्भ में कहते हैं कि पुरुष वचर्स्ववादी तरीके अपनाकर नारी को गुलाम बना लिया है। जब मानव जाति ने कृषि व्यवस्था का आविष्कार किया जिसके चलते नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिंदगी दो टुकड़ों में बँट गई। नारी पराधीन होकर अपने समस्त मूल्य भूल गयी। अपने अस्तित्व की अधिकारिणी भी नहीं रही। उसे यह लगने लगा कि मेरा अस्तित्व पुरुष को होने को लेकर है। समाज ने भी नारी को भोग्या समझकर उसका उपभोग खूब किया। वसुंधरा भोगीयों ने नारी को आनंद की खान मानकर उसका जी भर उपभोग किया। दिनकर मानते हैं कि नर और नारी एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं। अत: अर्द्धनारीश्वर केवल इसी बात का प्रतीक नहीं हैं कि नारी और नर जब तक अलग हैं तब तक दोनों अधूरे हैं बल्कि इस बात का भी की जिस पुरुष में नारीत्व की ज्योति जगे, बल्कि यह कि प्रत्येक नारी में भी पौरुष का स्पष्ट आभास हो।

(iii) जीवनी—रघुवीर सहाय (कवि) का जन्म 9 दिसम्बर को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनकी शिक्षा लखनऊ में ही अंग्रेजी में एम०ए० तक हुई। ये पेशे से पत्रकार थे। 'प्रतीक' में सहायक सम्पादक के रूप में पहले काम आरंभ किया। फिर आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। कुछ समय तक कल्पना का सम्पादन कार्य किया और अनेक वर्षों तक दिनमान का सम्पादन-कार्य करते रहे।

कवि रघुवीर सहाय ने कविता के अलावे रचनात्मक गद्य भी लिखे हैं। उनके काव्य संसार में आत्मपरक अनुभवों की जगह जनजीवन के अनुभवों की रचनात्मक अभिव्यक्ति अधिक है। इनका निधन 199० ई० में हुआ।

लेखक रघुवीर सहाय पेशे से पत्रकार होते हुये भी कविता को उन्होंने एक कहानीपन और नाटकीय वैभव दिया है। इनकी प्रथम समर्थ रचना 'सीढ़ियों पर धूप में', इसके पश्चात् 'आत्महत्या के विरूद्ध', 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो', 'लोग भूल गये हैं' आदि रचनाएँ हैं। 'लोग उन्हें भूल गए हैं' रचना पर उन्हें साहित्यक अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। रघुवीर सहाय की नई कविता' के समर्थ कवियों में गिना जाता है।

कविता का सारांश—प्रस्तुत कविता रघुवीर सहाय के काव्यसंग्रह 'आत्महत्या के विरूद्ध' से ली गई है। यह एक व्यंग्य कविता है। ऐसी व्यंग्य कविता हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तिक्त कटाक्ष है। राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है। स्वाधीनता प्राप्त होने के इतने वर्षों के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया। कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है। वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक, सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है। राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्न' पहने वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इन लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है। सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ वाले भड़कीले रोब-दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है। कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात् तानाशाह बनने की।

(iv) जीवनी—अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी 1941 ई० दुर्ग, छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनकी माता का नाम निर्मला देवी एवं पिता का नाम परमानन्द वाजपेयी था। उनकी प्राथमिक शिक्षा गवर्नमेंट हायर सेकेन्ड्री स्कूल, सागर में हुई। सागर विश्वविद्यालय से बी०ए० और सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी में एम०ए० किया।

वे भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे तथा महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय के प्रथम कुलपति पद से सेवा निवृत हुए। वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए। सम्प्रति वे दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कार्य कर रहे हैं।

तीन दर्जन के लगभग उनकी मौलिक एवं संपादित रचनाएँ प्रकाशित हुईं। इनकी निम्नलिखित कविताएँ प्रकाशित हुईं—''शहर अब भी संभावना है'', ''एक पतंग अनन्त में'', ''अगर इतने से'', ''तत्पुरुष'', ''कहीं नहीं वहीं'', ''बहुरि अकेला'', ''थोड़ी सी जगह'', ''घास में दुबका आकाश'', ''आविन्यो'', ''अभी कुछ और'', ''समय के पास समय'', ''इबादत से गिरी मात्राएँ'', ''कुछ रफू कुछ थिगड़े'', ''उम्मीद का दूसरा नाम'', ''विवक्षा'', ''दुख विट्ठीरसा है''।

कविता का सारांश—अशोक वाजपेयी समसामयिक कवि हैं। उनकी हार-जीत का एक गद्य कविता है। इस कविता की विशेषता यह है कि इस कविता में दैनंदिन जीवन अनुभवों की धरती से बोलचाल बात-चीत और सामान्य मन: चिंतन के रूप में उगा हुआ है। कवि युद्ध की स्थिति से क्षुब्ध है। वह शासकों के क्रियाकलाप से असंतुष्ट हैं। वह युद्ध के विषय में हार-जीत पर प्रश्न खड़ा करता है कि आखिर इस युद्ध में हार-जीत किसकी होती है। कवि कहते हैं कि शासक लोग उत्सव मना रहे हैं। सारे शहर को सजाया जा रहा है। शासकों ने जनता को बता रखा है कि उनकी सेना विजय करके लौटी है। कवि यह बताते हैं कि नागरिकों से ज्यादातर लोगों में किसी को पता नहीं है कि किस युद्ध में उनकी सेना गई थी। यह विजय पर्व किस लिए है। शासक धोखेबाज हैं। कवि शासक की धूर्तता उसकी राजनीति की पोल खोलता है क्योंकि शासक युद्ध में जितने सेना शहीद होते है उसकी सूची इसलिए प्रकाशित नहीं करता है कि जनता बौखला जाएगी। शासकों के आने के कारण सड़कों को गीला किया जा रहा है क्योंकि उन पर कहीं धूल नहीं पड़ जाए। शासक गाजे-बाजे के साथ अपने प्रभुत्व के लिए दिखावा कर रहे हैं। बूढ़ा मशकवाला के माध्यम से कवि यह कहता है कि युद्ध हार-जीत की नहीं होती बल्कि विनाश ही करती है। जनता को सिर्फ काम में लगाया गया है। उसे सच कहने की इजाजत नहीं है। वह कविता रघुवीर सहाय के अधिनायक से मेल खाती है।

(v) कवि की समृति में ''घर का चौखट'' जीवन की ताजगी से लबरेज है। उसे चौखट इतना जीवित इसलिए प्रतीत होता है कि इस चौखट की सीमा पर सदैव चहल-पहल रहती है। कवि अतीत की अपनी स्मृति के झरोखे से इस हलचल को स्पष्ट रूप से देखता है अर्थात् ऐसा अनुभव करता है, जब उस चौखट पर बुजुर्गों को घर के अन्दर अपने आने की सूचना के लिए खाँसना पड़ता था तथा उनकी खड़ाऊँ की ''खट-पट'' की स्वर-लहरी सुनाई पड़ती थी। इसके अतिरिक्त बिना किसी का नाम पुकारे अन्दर आने की सूचना हेतु पुकारना पड़ता था। चौखट के बगल में गेरु से रंगी हुई दीवार थी। ग्वाल दादा (दूध देने वाले) प्रतिदिन आकर दूध की आपूर्ति करते थे। उसकी मात्रा का विवरण दूध से सने अपने अंगूठे की उस दीवार पर छाप द्वारा करते थे, जिनकी गिनती महीने के अंत में दूध का हिसाब करने के लिए की जाती थी। यह गाँवों की पुरानी परिपाटी थी।

उपरोक्त वर्णित उन समस्त औपचारिकताओं के बीच ''घर की चौखट'' सदैव जाग्रत रहता था, जीवन्तता का अहसास दिलाता था।

(vi) कवि, उनकी पत्नी तथा बिटिया द्वारा तीन विविध रूपों में लोहे की पहचान की गई है। ये तीनों रूप पारिवारिक, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय मूल्यों तथा आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोहा शक्ति तथा ऊर्जा का प्रतीक है। इसका निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। यह निर्माण पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में समान रूप से अनवरत् चल रहा है। प्रत्येक वह औरत जो दबी, सतायी तथ बोझा उठाने वाली है, अर्थात् परिश्रमी है, कठिन कार्यों में लगी हुई है, वह लोहा है अर्थात् मेहनतकश आदमी या दबी, सतायी औरत के द्वारा लोहे की खोज का आशय उसको शोषण से मुक्त करना है।

6. (i) शीर्षक : संजीवनी शक्ति

संक्षेपण—किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरने वाला साहित्य ही है। इसलिए यह सर्वतोभावेन संरक्षणीय है। इसके अभाव में हम कुछ भी नहीं पा सकेंगे। अन्याय लौकिक वैभव नश्वर हैं। इसलिए इसको पकड़े रहने वाला व्यक्ति अमर रहेगा। **[कुल शब्द—79, संक्षेपित शब्द—39]**

(ii) शीर्षक : परिश्रम और प्रेम

संक्षेपण—मनुष्य जिस काम को अपने हाथों से करता है उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप में मिल जाती है फलस्वरूप परिश्रम से बनी चीजों में जीवन-शक्ति भर जाती है।

[कुल शब्द—99, संक्षेपित शब्द—33]

❑❑❑